

मुख्य परीक्षा

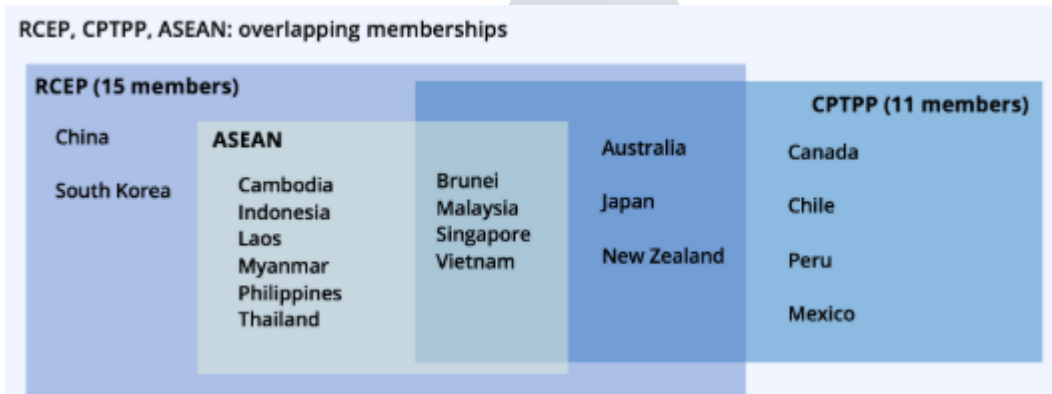
भारत की 'RCEP माइनस चीन' रणनीति

संदर्भ

भारत ने औपचारिक रूप से इस समूह में शामिल हुए बिना, इसके लगभग सभी सदस्य देशों के साथ द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते (FTAs) संपन्न कर RCEP (क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी) के बाजार-प्रवेश से जुड़े लाभ प्रभावी रूप से सुनिश्चित कर लिए हैं।

RCEP के बारे में -

- यह 15 एशिया-प्रशांत देशों के बीच एक मुक्त व्यापार समझौता है, जिसका उद्देश्य एक आधुनिक, परस्पर लाभकारी आर्थिक साझेदारी स्थापित करना है।
- सदस्य: 10 ASEAN समूह के सदस्य (ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, मलेशिया, म्यांमार, सिंगापुर, थाईलैंड, फिलीपींस, लाओस और वियतनाम) तथा 6 FTA भागीदार — चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड।
- यह सदस्य देशों के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के आधार पर विश्व का सबसे बड़ा मुक्त व्यापार समझौता है।
- RCEP की परिकल्पना 2011 में इंडोनेशिया के बाली में आयोजित ASEAN शिखर सम्मेलन में की गई थी। लेकिन यह 2022 में लागू हुआ।
- भारत RCEP का एक संस्थापक सदस्य था। लेकिन 2019 में भारत ने इससे अलग होने का निर्णय लिया।



भारत ने RCEP से बाहर निकलने का विकल्प क्यों चुना?

- भारत को चीनी वस्तुओं के शुल्क-मुक्त या कम-शुल्क प्रवेश की आशंका थी, जिससे घरेलू विनिर्माण को नुकसान हो सकता था।
- विशेषकर चीन के साथ बड़े व्यापार घाटे के कारण आयात में तीव्र वृद्धि को लेकर चिंताएँ थीं।
- डेयरी, MSMEs, इस्पात और वस्त्र जैसे भारतीय क्षेत्रों को संवेदनशील माना गया।
- अचानक आयात वृद्धि के विरुद्ध सुरक्षा उपायों को अपर्याप्त माना गया।
- भारत का तर्क था कि RCEP में बाजार पहुँच, उद्गम नियम (Rules of Origin) और गैर-शुल्क बाधाओं (Non-Tariff Barriers) से संबंधित उसकी मूल चिंताओं का समुचित प्रतिबिंब नहीं है।

RCEP फ्रेमवर्क के भीतर जोखिम -

- **श्रम मानकों को कमजोर करना:** RCEP, फर्मों को कमजोर श्रम सुरक्षा वाले उच्च वेतन वाली अर्थव्यवस्थाओं से कम लागत वाले सदस्यों में उत्पादन स्थानांतरित करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।
 - उदाहरण के लिए, ऑस्ट्रेलिया या जापान से दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ हिस्सों में विनिर्माण बढ़ रहा है।

- **नैतिक वेतन और काम करने की स्थिति की चिंताएं:** लागत-संचालित स्थानांतरण जोखिम कम मजदूरी, लंबे समय तक और कमजोर सामाजिक सुरक्षा को सामान्य करता है।
 - उदाहरण के लिए, न्यूनतम श्रम प्रवर्तन वाले देशों में परिधान और इलेक्ट्रॉनिक्स आपूर्ति श्रृंखलाएं।
- **चीन-केंद्रित आपूर्ति श्रृंखला प्रभुत्व:** RCEP क्षेत्रीय मूल्य श्रृंखलाओं में चीन की केंद्रीय भूमिका को और मजबूत कर सकता है।
 - उदाहरण के लिए, तरजीही पहुंच के लिए आसियान देशों के माध्यम से चीनी मध्यवर्ती सामान।
- **लाभ का असमान वितरण:** मजबूत विनिर्माण अर्थव्यवस्थाओं को अधिक लाभ होता है, जबकि गरीब सदस्य कम मूल्य वाले क्षेत्रों में फंसे रहते हैं।
 - उदाहरण के लिए, कंबोडिया और लाओस असेम्बली-आधारित, कम मजदूरी वाले उत्पादन तक ही सीमित हैं।
- **कमजोर पारदर्शिता और जवाबदेही:** सीमित सार्वजनिक जांच और स्वतंत्र प्रभाव आकलन की अनुपस्थिति शासन की चिंताओं को बढ़ाती है।
 - उदाहरण के लिए, RCEP के आर्थिक और सामाजिक प्रभावों पर एक स्वतंत्र अध्ययन शुरू करने से ऑस्ट्रेलिया का इनकार।

भारत ने बेहतर व्यापार परिणाम कैसे हासिल किया?

- **एक मेगा-ब्लॉक के बजाय द्विपक्षीय एफटीए:** भारत ने RCEP सदस्यों के साथ एक-से-एक मुक्त व्यापार समझौतों (one-to-one FTA) को चुना, जिससे इसे बातचीत का लचीलापन मिला।
 - उदाहरण के लिए, जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया तथा हाल ही में संपन्न न्यूजीलैंड के साथ FTAs ने भारत को RCEP के समान नियमों से बंधे बिना बाजार-प्रवेश की सुविधा प्रदान की।
- **चीन की तुलना में पूर्ण टैरिफ स्वायत्तता:** क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (RCEP) से बाहर रहकर, भारत ने चीनी वस्तुओं के लिए शून्य-शुल्क पहुंच से परहेज किया, जिससे घरेलू विनिर्माण को आयात में वृद्धि से बचाया जा सके।
 - उदाहरण के लिए, वियतनाम या इंडोनेशिया के विपरीत, भारत को चीनी प्रतिस्पर्धा के लिए स्टील, इलेक्ट्रॉनिक्स या रसायन जैसे क्षेत्रों को खोलने की आवश्यकता नहीं थी।
- **संवेदनशील घरेलू क्षेत्रों की सुरक्षा:** द्विपक्षीय एफटीए ने भारत को कमजोर क्षेत्रों में उदारीकरण को बाहर करने या देरी करने की अनुमति दी।
 - उदाहरण के लिए, भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते (ईसीटीए) में, भारत ने फार्मास्यूटिकल्स और वस्त्रों के लिए निर्यात पहुंच प्राप्त करते हुए डेयरी और कृषि को परिरक्षित किया।
- **अप्रत्यक्ष चीनी डंपिंग का कम जोखिम:** RCEP के उत्पत्ति के सामान्य नियम चीनी सामानों को आसियान देशों के माध्यम से भारत में प्रवेश करने में सक्षम बना सकते थे। द्विपक्षीय एफटीए ने सख्त उत्पत्ति मानदंडों की अनुमति दी।
 - उदाहरण के लिए, भारत के एफटीए मूल्य-वर्धित आवश्यकताओं को लागू करते हैं, वियतनाम या मलेशिया जैसे देशों के माध्यम से चीनी उत्पादों के पुनः मार्ग को सीमित करते हैं।
- **सीमित और नियंत्रित चीन जुड़ाव:** भारत ने केवल एशिया प्रशांत व्यापार समझौते (एपीटीए) के तहत चीन के साथ व्यापार संबंधों को बनाए रखा, जिसमें मामूली टैरिफ कटौती के साथ माल की एक संकीर्ण सूची शामिल है।
 - उदाहरण के लिए, एफटीए के विपरीत, एपीटीए एक्सपोजर को प्रबंधनीय रखते हुए, पूरे बोर्ड टैरिफ उन्मूलन को अनिवार्य नहीं करता है।
- **रणनीतिक भेद्यता के बिना बाजार पहुंच:** भारत अब चीन को छोड़कर लगभग पूरे RCEP बाजार तक पहुंच का आनंद लेता है, नीतिगत स्थान को संरक्षित करते हुए आर्थिक लाभ प्राप्त करता है।
 - उदाहरण के लिए, भारतीय निर्यातकों को चीनी आयात से घरेलू उद्योग व्यवधान का जोखिम उठाए बिना जापान, आसियान, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड तक तरजीही पहुंच से लाभ होता है।

स्रोत: [द हिंदू](#)

भारतीय अर्थव्यवस्था से संकेत

संदर्भ

भारत की अर्थव्यवस्था को 2025 में उथल-पुथल भरे वर्ष का सामना करना पड़ा है, जिसमें विकास को बढ़ावा देने वाले कई नीतिगत सुधार लगातार घरेलू और वैश्विक चुनौतियों के कारण बेअसर साबित हुए हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था में सकारात्मक क्या हैं?

- **विकास-समर्थक राजकोषीय सुधार:** बजट 2025 ने आयकर का बोझ कम किया, जिससे प्रयोज्य आय और उपभोग में वृद्धि हुई।
- **जीएसटी को युक्तिसंगत बनाना:** 12% और 28% जीएसटी स्लैब को हटाने से कई वस्तुओं की कीमतें कम हो गईं, जिससे मांग में सुधार और अनुपालन में सहायता मिली।
- **श्रम बाजार में सुधार:** चार श्रम संहिताओं के कार्यान्वयन ने सामाजिक सुरक्षा कवरेज का विस्तार किया और श्रम लचीलेपन में सुधार किया।
- **व्यापार कूटनीति लाभ:** भारत-ब्रिटेन व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौता (जुलाई 2025)।
 - ईएफटीए व्यापार और आर्थिक भागीदारी समझौता 100 बिलियन डॉलर की निवेश प्रतिबद्धता के साथ संचालित हुआ।
 - ओमान के साथ सीईपीए और न्यूजीलैंड के साथ एफटीए का समापन।
- **अमेरिका के साथ रणनीतिक जुड़ाव:** भारत सरकार और अमेरिका द्वारा 2025 की शुरुआत में संभावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर की गई घोषणा ने मजबूत इरादे का संकेत दिया।

2025 में नकारात्मक क्या थे?

- **अमेरिका का शुल्क झटका:** असफल व्यापार वार्ताओं और भारत के रूसी तेल आयात के कारण भारतीय निर्यात पर 50% तक शुल्क लगाए जाने से निर्यात प्रभावित हुआ।
- **श्रम-प्रधान क्षेत्रों पर दबाव:** वस्त्र, चमड़ा और इंजीनियरिंग वस्तुओं को अमेरिकी बाजार से घटते ऑर्डरों का सामना करना पड़ा।
- **व्यापार अनिश्चितता:** अमेरिका के साथ लंबी चली वार्ताओं ने निर्यातकों के लिए नीतिगत अनिश्चितता उत्पन्न की।
- **निर्यात समर्थन में विलंब:** निर्यात प्रोत्साहन मिशन की घोषणा तो हुई, लेकिन परिचालन स्पष्टता के अभाव में तात्कालिक राहत सीमित रही।
- **विकास दर के मंद होने का जोखिम:** 2025-26 की दूसरी छमाही में विकास की गति धीमी रहने की आशंका।

निहितार्थ क्या हैं?

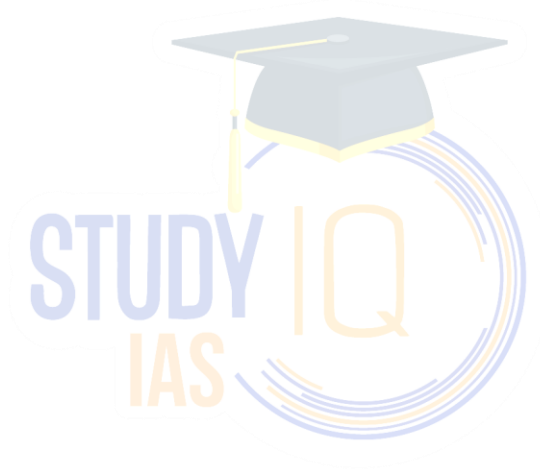
- **अल्पकालिक निर्यात तनाव:** अमेरिकी टैरिफ निर्यात-उन्मुख क्षेत्रों में विनिर्माण उत्पादन और रोजगार को कम कर सकते हैं।
- **विकास में मंदी का जोखिम:** भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार, 2025-26 के लिए सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 7.3% रहने का अनुमान है, जिसका अर्थ है कि आगे मंदी आएगी।
- **व्यापार विविधीकरण तात्कालिकता:** अमेरिका जैसे कुछ बाजारों पर अत्यधिक निर्भरता उजागर हुई है।
- **नीतिगत विश्वसनीयता घरेलू स्तर पर बढ़ावा:** कर, जीएसटी और श्रम सुधार भारत के दीर्घकालिक आर्थिक बुनियादी सिद्धांतों को मजबूत करते हैं।
- **बेहतर डेटा विश्वसनीयता:** GDP, IIP और CPI के लिए आधार वर्षों को अपडेट करने से व्यापक आर्थिक सटीकता और निवेशकों का विश्वास बढ़ेगा।

आगे की राह क्या है?

- **व्यापार विविधीकरण में तेजी:** यूरोपीय संघ (EU) के साथ व्यापार समझौतों को अंतिम रूप देना, पश्चिम एशिया, अफ्रीका और हिंद-प्रशांत बाजारों के साथ संबंधों को सुदृढ़ करना।

- **अमेरिका के साथ व्यापार तनाव का समाधान:** रणनीतिक हितों की रक्षा करते हुए शुल्कों में कमी हेतु व्यावहारिक वार्ता।
- **निर्यात समर्थन का क्रियान्वयन:** ऋण सहायता और गैर-शुल्क बाधाओं (NTBs) के शमन के साथ निर्यात प्रोत्साहन मिशन का शीघ्र कार्यान्वयन।
- **घरेलू मांग को बढ़ावा:** बाह्य आघातों की भरपाई के लिए कर युक्तिकरण और लक्षित कल्याणकारी व्यय को जारी रखना।
- **डेटा-आधारित नीति-निर्माण को सुदृढ़ करना:** उत्तरदायी राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों के निर्माण हेतु उन्नत व्यापक आर्थिक संकेतकों का उपयोग।

स्रोत: [द हिंदू](#)



प्रारंभिक परीक्षा

शेल्फ-एम

संदर्भ

रोसआटम स्टेट कॉरपोरेशन ने लघु मॉड्यूलर रिएक्टरों(SMRs) पर सहयोग संबंधी चर्चाओं के तहत भारत को अपना शेल्फ-एम (Shelf-M) प्रस्तावित किया है।

शेल्फ-एम क्या है?

- **प्रकार:** माइक्रो परमाणु रिएक्टर (पारंपरिक SMRs से छोटा)।
- **क्षमता:**
 - विद्युत: अधिकतम 10 Mwe
 - तापीय: 35 MWth
- **कूलिंग और मॉडरेशन:** वाटर-कूल्ड और वाटर-मॉडरेटेड रिएक्टर।
- **ईंधन:** सिलुमिन (एल्यूमीनियम-सिलिकॉन मिश्र धातु) मैट्रिक्स में फैला हुआ यूरेनियम डाइऑक्साइड ईंधन।
- **ईंधन भरने का अंतराल:** हर 8 साल में एक बार, परिचालन रुकावटों को कम करना।
- **दूरदराज के क्षेत्रों में बिजली की आपूर्ति के लिए रूस के चुकोटका स्वायत्त आक्रग के लिए पहला शेल्फ-एम रिएक्टर बनाया जा रहा है।**

स्रोत: [बिजनेसलाइन](#)

आईएनएस वाघशीर

संदर्भ

द्रौपदी मुर्मू ने पश्चिमी समुद्र तट पर आईएनएस वागशीर पर सवार होकर एक पनडुब्बी सॉर्टी (submarine sortie) की।

आईएनएस वाघशीर के बारे में -

- यह भारतीय नौसेना के महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट-75 के तहत निर्मित कलवरी-श्रेणी (स्कॉर्पीन-डिज़ाइन) की छठी और अंतिम पनडुब्बी है।
- **कमीशन की तिथि:** 15 जनवरी, 2025
- नई वागशीर, पुरानी वागशीर (S43) का कायापलट है, जो सोवियत-मूल की वेला-श्रेणी की पनडुब्बी थी और जिसने 1974 से 1997 तक भारतीय नौसेना में अपनी सेवाएँ दी थीं।

- इसे फ्रांस के नेवल ग्रुप (Naval Group) की तकनीकी सहायता से मुंबई स्थित मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (MDL) द्वारा निर्मित किया गया है।

प्रोजेक्ट 75 की अन्य पनडुब्बियाँ

- आईएनएस कलवरी (2017), आईएनएस खंडेरी (2019), आईएनएस करंज (2021), आईएनएस वेला (2021), आईएनएस वागीर (2023)

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)

माइक्रो रोबोट

संदर्भ

वैज्ञानिकों ने ऑनबोर्ड इलेक्ट्रॉनिक्स (onboard electronics) से युक्त एक माइक्रो रोबोट का निर्माण किया है।

माइक्रो रोबोट के बारे में -

- ये अत्यंत सूक्ष्म स्वायत्त या अर्ध-स्वायत्त मशीनें हैं, जो अक्सर धूल के एक कण से भी छोटी होती हैं, जिन्हें सूक्ष्म स्तरों पर सेंसिंग, संचालन, या गणना करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- इन्हें सेमीकंडक्टर चिप-मेकिंग(CMOS) तकनीकों का उपयोग करके बनाया जाता है।
- **प्रमुख विशेषताएँ:**
 - निर्देशों को दूरस्थ रूप से अपडेट किया जा सकता है (उदाहरण के लिए, प्रकाश संकेतों के माध्यम से)।
 - बैटरी के बिना संचालित, आमतौर पर प्रकाश के माध्यम से।
 - गति और कार्यों का मार्गदर्शन करने के लिए तापमान, रसायन या दबाव जैसे मापदंडों को मापने में सक्षम।

स्रोत: [द हिंदू](#)

क्रोनिक ऑब्स्ट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज

संदर्भ

क्रोनिक ऑब्स्ट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज(COPD) से जुड़ी सार्वजनिक स्वास्थ्य आपदा बढ़ रही है।

क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज के बारे में -

- यह एक दीर्घकालिक, प्रगतिशील फेफड़ों का रोग है जो निरंतर वायुप्रवाह अवरोध (airflow limitation) द्वारा लक्षित होता है, जिसमें सामान्यतः क्रोनिक ब्रोंकाइटिस और वातस्फीति (emphysema) शामिल होते हैं।
- अपरिवर्तनीय प्रकृति: एक बार फेफड़ों की कार्यक्षमता नष्ट हो जाने के बाद, यह काफी हद तक अपरिवर्तनीय होती है; उपचार लक्षणों को कम कर सकता है और गिरावट को धीमा कर सकता है, लेकिन क्षतिग्रस्त फेफड़ों के ऊतकों (lung tissue) को पुनर्स्थापित नहीं कर सकता।
- भारत में प्रमुख कारण:
 - बाहरी वायु प्रदूषण (PM2.5 एक्सपोजर)
 - इनडोर बायोमास ईंधन का धुआं (विशेषकर ग्रामीण और अर्ध-शहरी महिलाओं के बीच)
 - धूम्रपान (अभी भी प्रासंगिक है लेकिन भारत में प्रमुख चालक नहीं है)
 - बार-बार होने वाले श्वसन संक्रमण और व्यावसायिक धूल

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)

सोमालीलैंड

संदर्भ

इजरायल सोमालीलैंड को औपचारिक रूप से एक स्वतंत्र और संप्रभु राज्य के रूप में मान्यता देने वाला पहला देश बन गया है।

सोमालीलैंड के बारे में -

- यह हॉर्न ऑफ अफ्रीका में एक स्व-घोषित स्वतंत्र राज्य है जो 1991 में सोमालिया से अलग हो गया था।



- अवस्थिति: उत्तर-पश्चिमी सोमालिया, जिबूती, इथियोपिया, अदन की खाड़ी और सोमालिया से घिरा है।
- 30 वर्षों से अधिक समय तक एक वास्तविक राज्य के रूप में कार्य करने के बावजूद, क्षेत्रीय अखंडता पर अफ्रीकी संघ के मानदंडों को लेकर चिंताओं के कारण इसे औपचारिक मान्यता प्राप्त नहीं थी।
- सामरिक महत्व:
 - महत्वपूर्ण लाल सागर-अदन की खाड़ी समुद्री मार्गों के पास स्थित है
 - बाब अल-मंडेब जलडमरूमध्य के निकट होने के कारण वैश्विक शक्तियों के लिए रुचि का विषय।
- शासन: इसका अपना संविधान, निर्वाचित सरकार, संसद, न्यायपालिका, मुद्रा और सुरक्षा बल हैं

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)